अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

4.0 भूमिका –

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोधप्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्के के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं के स्वीकृति हेतु प्रदत्तों का समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धांत की खोज तथा सामान्यीकरण रूप से होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना उनके परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया हैं इस शोध अध्ययन में कुल 7 परिकल्पनाएँ रखी गई है। जिसकी जाँच करने के उपरान्त त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई।

– जे.एच. पाईनकर के शब्दों में–

"एक मकान का निर्माण पत्थरों से होता है किन्तु पत्थरों के ढेर से नहीं वरन् जटिल पत्थरों को सुव्यवस्थित रूप से रखने से होता है, वैज्ञानिक तथ्य का निर्माण भी तथ्यों के संकलन उपरान्त उचित विश्लेषण तथा व्याख्या द्वारा होता है।

4.1 परिकल्पना–1

इस शोधकार्य की प्रथम परिकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में स्त्रीयों की सहभागिताएँ बढ़ रही है। इसका अर्थ यह हुआ कि बी.एड्. महाविद्यालय में जो शिक्षक प्रशिक्षणार्थी आ रहे हैं,उनमें पुरूषों की तुलना में स्त्रीयों की सहभागिता बढ़ रहीं है। इसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्न तालिका क्र. 4.1 (A) और 4.1 (B) से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

तालिका – 4.1 (A) (संगमनेर बी.एड्. शासकीय महाविद्यालय)

Year (वर्ष)	Sex (लिंग)	
	Male (पुरूष)	Female(स्त्री)
2003–04	40	40
2004–05	36	44
2005–06	34	46
2006–07	33	47
2007–08	33	47
2008–09	32	48

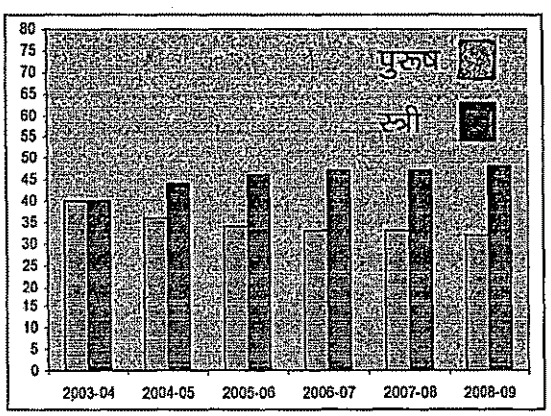

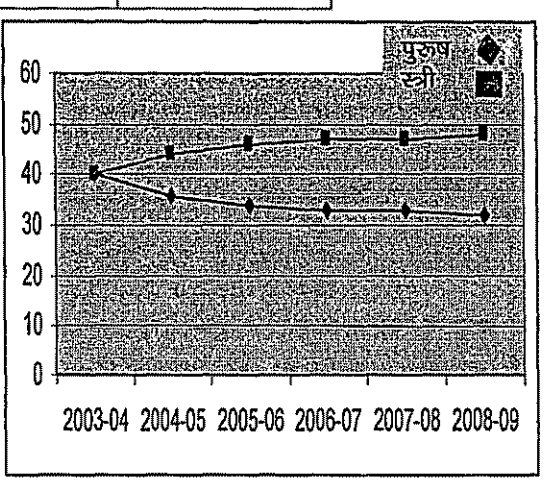

तालिका– 4.1 (B)

प्रवरा ग्रामीण शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय

Year (वर्ष)	Sex (लिंग)	
	Male पुरूष)	Female (स्त्री)
2003-04	46	34
2004-05	42	38
2005-06	55	45
2006-07	47	53
2007-08	45	55
2008-09	38	62

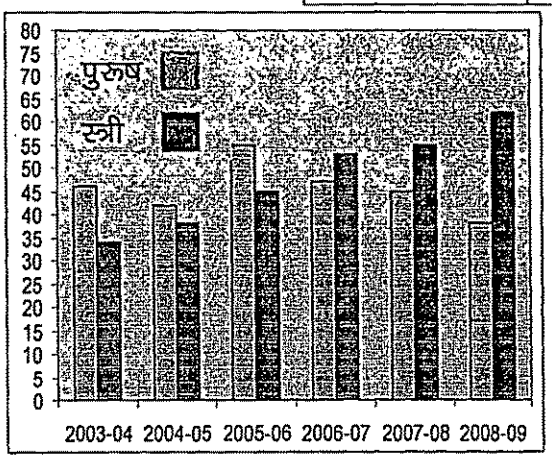

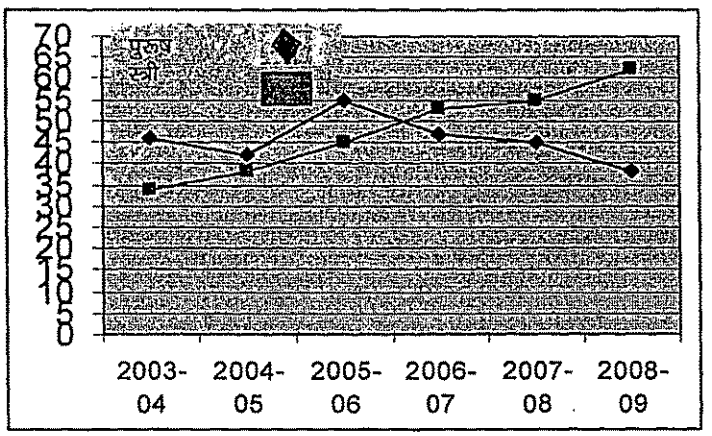

तालिका कमांक 4.1 (A) और 4.2 (B) से ज्ञात होता है कि पुरूषों की तुलना में स्त्रीयों की दोनों बी.एड्. महाविद्यालय में सहभागिता बढ़ रही है।

संगमनेर शासकीय महाविद्यालय में 2003-04 वर्ष में पुरूष और स्त्रीयों की संख्या 40-40 थीं प्रत्येंक वर्ष स्त्रीयों की संख्या बढ़ती गयी

लेकिन 2006-07 व 2007-08 इस वर्ष में संख्या बढ़ी नही वो 47 ही रही। 2008-09 इस वर्ष में वो एक से बढ़कर 48 हुई।

प्रवरा ग्रामीण महाविद्यालय में वर्ष 2003-04 में स्त्रीयों की संख्या 34 थी और पुरूष संख्या 46 थी, 2004-05 में स्त्रीयों की संख्या 4 से बढ़ी, 2005-06 में स्त्रीयों की संख्या 45 हुई और 2006-07 में 53 हुई, और 2007-08 में वही संख्या दो से बढ़कर 55 हुई और 2008-09 में वही संख्या सात से बढ़कर 62 हुई।

इसीलिए परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक-प्रशिक्षणार्थीयों में स्त्रीयों की सहभागिताएँ बढ़ रही है।

4.2 परिकल्पना- 2

इस शोधकार्य की द्वितीय परिकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में कनिष्ठ जाति की सहभागिताएँ बढ़ रही है। इसका अर्थ यह हुआ कि बी.एड्. महाविद्यालय में वरिष्ठ जाति के लोग कनिष्ठ जाति की तुलना में कम आ रहे हैं। इसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्न तालिका क्र. 4.2 (A) और 4.2 (B) से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

तालिका कमांक 4.2 (A) संगमनेर बी.एड्. शासकीय महाविद्यालय

Year (वर्ष)	Caste (जाति)		
	Upper caste	Lower caste	
		पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति
2003-04	33	18	29
2004-05	31	17	32
2005-06	30	19	31
2006-07	28	22	30
2007-08	23	20	37
2008-09	22	24	34

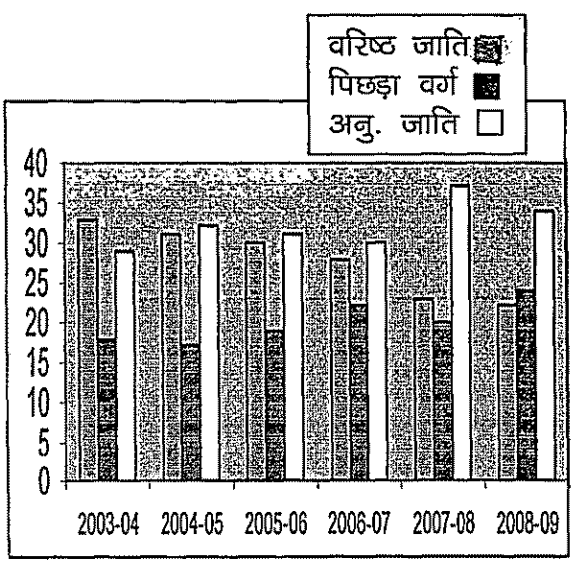

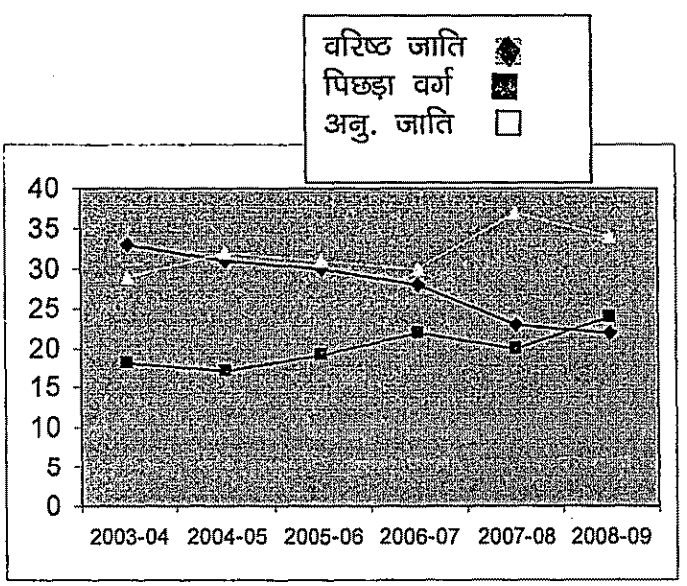

तालिका कमांक 4.2 (B) प्रवरा ग्रामीण शासकीय महाविद्यालय)

Year (वर्ष)	Caste (जाति)		
	Upper caste (वरिष्ठ जाति)	Lower caste (कनिष्ठ जाति)	
		पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति
2003-04	46	11	23
2004-05	37	18	25
2005-06	54	18	28
2006-07	48	23	29
2007-08	47	13	40
2008-09	45	10	45

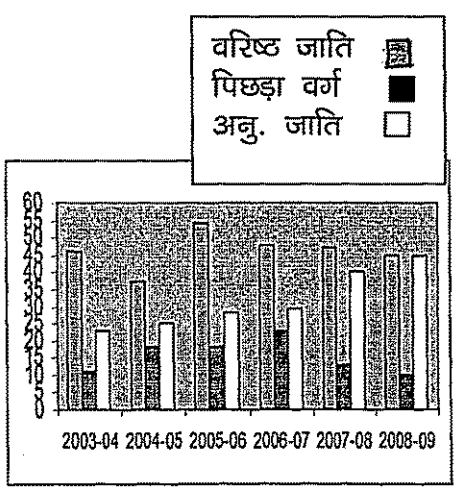

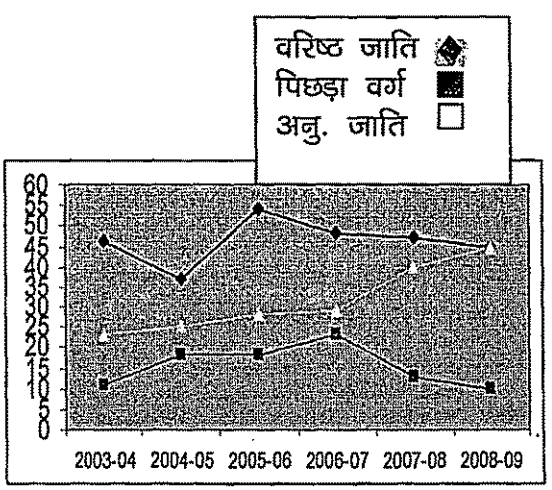

तालिका कमांक 4.2 (A) और 4.2 (B) से ज्ञात होता है कि वरिष्ट जाति की तुलना में कनिष्ट जाति की सहभागिता बी.एड्. महाविद्यालय में बढ़ रही हैं।

संगमनेर शासकीय बी.एड्. महाविद्यालय में 2003-04 इस वर्ष में वरिष्ठ जाति के 33 छात्र पिछड़ा वर्ग (OBC) के 18 छात्र और अनुसूचित जाति के 29 छात्र थे। छः वर्ष के तालिका के देखा जाये तो हर वर्ष में वरिष्ठ जाति के छात्र कम होते गये और कनिष्ठ जाति के छात्रों की संख्या बढ़ती गई 2008-09 साल में वो सबसे ज्यादा 58 थी।

प्रवरा ग्रामीण बी.एड्. महाविद्यालयों में 2003-04 में इस वर्ष में वरिष्ठ जाति के 46 छात्र, कनिष्ठ जाति में पिछड़ा वर्ग (OBC) के 11 छात्र और अनु.जाति के 23 छात्र थे। छः वर्ष के तालिका के देखा जाये तो हर वर्ष में वरिष्ठ जाति के छात्र कम होते गये तथा पिछड़ा वर्ग के छात्र भी कम होते गये और अनु.जाति के छात्रों की संख्या हर साल बढ़ती गई।

इसीलिए परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों में कनिष्ठ जाति की सहभागीताएँ बढ़ रही है।

4.3 परिकल्पना-3

इस शोधकार्य की तृतीय परिकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र की सहभागिताएँ बढ़ रही है। इसका अर्थ यह हुआ कि बी.एड्. महाविद्यालय में शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी ज्यादा आ रहे है। इसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्न तालिका कमांक 4.3 (A) और 4.3 (B) से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

तालिका कमांक-4.3 (A) संगमनेर बी.एड्. शासकीय महाविद्यालय

Year (वर्ष)	Area (क्षेत्र)	
	Rural (ग्रामीण)	Urban (शहरी)
2003-04	47	36
2004-05	74	06
2005-06	79	01
2006-07	79	01
2007-08	79	01
2008-09	78	02

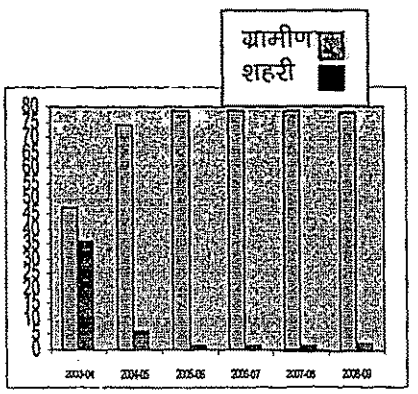

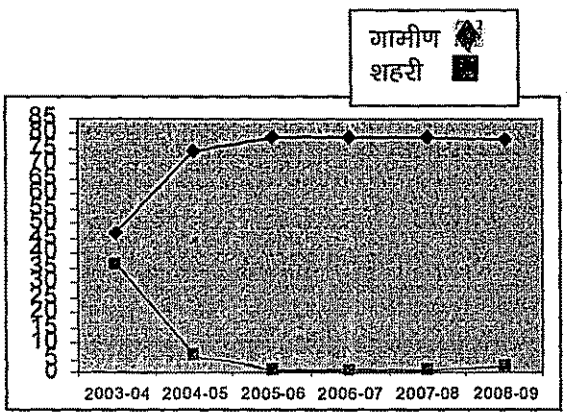

तालिका कमांक-4.3 (B) प्रवरा ग्रामीण शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय

	Area (क्षेत्र)	
	Rural (ग्रामीण)	Urban (शहरी)
2003-04	47	33
2004-05	60	20
2005-06	77	23
2006-07	85	15
2007-08	84	16
2008-09	86	14

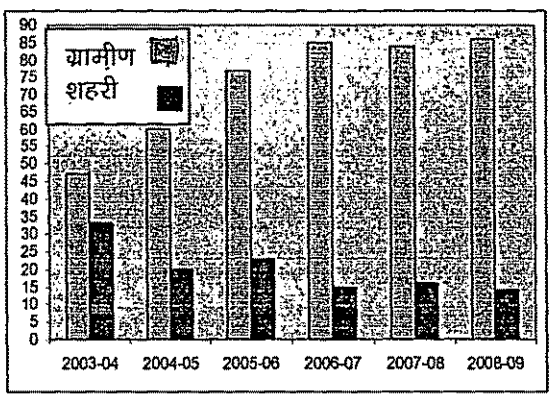

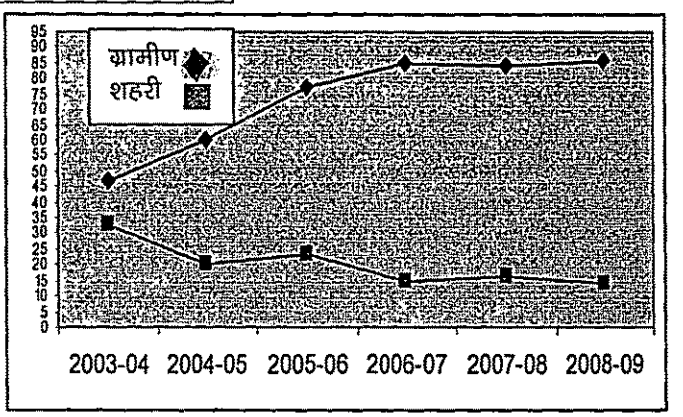

तालिका कमांक 4.3 (A) और 4.3 (B) से ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संख्या बी.एड्. महाविद्यालय में बढ़ रहीं है।

संगमनेर शासकीय बी.एड्. महाविद्यालय में 2003-04 वर्ष में ग्रामीण और शहरी छात्रों की संख्या कमशः 47 और 36 थी। 2004-05 इस वर्ष में ग्रामीण छात्रों की संख्या 27 से बढ़कर 74 हो गई। 2005-06 में ग्रामीण छात्रों की संख्या 5 से बढ़कर 79 हो गई। लेकिन 2006-07 और 2007-08 इस वर्ष में संख्या में कोई

बदलाव नहीं हुआ। 2008-09 में इस संख्या में एक से घट हो गई और यह संख्या 78 हो गई।

प्रवरा ग्रामीण महाविद्यालयों में 2003-04 इस वर्ष में ग्रामीण और शहरी छात्रों की संख्या क्रमशः 47 और 33 थी। दूसरे वर्ष में ग्रामीण छात्रों की संख्या 13 से बढकर 60 हो गई।प्रवरा ग्रामीण महाविद्यालय में हर वर्ष में ग्रामीण छात्रों की संख्या बढ़ गई और शहरी छात्रों की संख्या कम होती गई।

इसीलिए परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र की सहभागिताएँ बढ़ रही है।

4.4 परिकल्पना -4

इस शोधकार्य की चतुर्थ परिकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में लिंग के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि लिंग का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्न तालिका क्र. 4.4 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

तालिका क्र. 4.4

पुरूषों-स्त्रीयों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति दर्शाने वाली 'टी' मूल्य की सार्थकता

क्र.	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	टी मान	निष्कर्ष
1.	पुरूष	226.9	40.54	61	136	1.66	NS
2.	स्त्री	232.58	34.35	77			

तालिका क्र. 4.4 से ज्ञात होता है कि लिंग के लिए 'टी' का मान 1.66 हैं जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिंग का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4.5 परिकल्पना–5

इस शोधकार्य की पंचम परिकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि भौगोलिक क्षेत्र का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। उसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्न तालिका क्र.–4.5 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

तालिका क्र. 4.5

ग्रामीण–शहरी क्षेत्र शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति दर्शानेवाली 'टी' मूल्य की सार्थकता

क्र.	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	टी मान	निष्कर्ष
1.	ग्रामीण	249.07	24.47	14	136	2.19	NS
2.	शहरी	236.80	37.94	124			

तालिका क्र.–4.5 से ज्ञात होता है कि भौगोलिक क्षेत्र के लिए 'टी' का मान 2.19 है जो 0.02 स्तर पर सार्थक नहीं हैं इसीलिए परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों के भौगोलिक क्षेत्र का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4.6 परिकल्पना–6

इस शोधकार्य की छटवीं परिकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जाति के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि जाति का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका परीक्षण करने के उपरान्त निम्न तालिका

क्र.–4.6 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

तालिका क्र.–4.6

वरिष्ठ जाति–कनिष्ठ जाति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति दर्शानेवाली 'टी' मूल्य की सार्थकता

क्र.	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	टी मान	निष्कर्ष
1.	वरिष्ठ जाति	238.43	39.24	63	136	0.43	NS
2.	कनिष्ठ जाति	237.16	34.58	75			

तालिका क्र. 4.6 से ज्ञात होता है कि जाति के लिए 'टी' का मान 0.43 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती हैं। इसका अर्थ यह है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के जाति का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4.7 परिकल्पना–7

उस शोधकार्य की सातवीं परिकल्पना यह है कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शासकीय और अशासकीय महाविद्यालय प्रकार के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्र.-4.7

शासकीय-अशासकीय महाविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति दर्शानेवाले 'टी' मूल्य की सार्थकता

क्र.	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	टी मान	निष्कर्ष
1.	शासकीय	237.27	38.6	82	136	0.09	NS
2.	अशासकीय	237.87	36.00	76			

तालिका क्र. 4.7 से ज्ञात होता है कि शासकीय-अशासकीय के लिए 'टी' का मान 0.09 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है। इसका अर्थ यह है कि शासकीय-अशासकीय महाविद्यालय का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।